

जीवन परिचय



डॉक्टर कुमार विश्वास

जीवन परिचय : डॉ. कुमार विश्वास

प्रकाशन - फरवरी २०१९

-साहित्य चिंतन

विषय - सूची

परिचय

कवि के बारे में

उनकी मुख्य कवितायें

कोई दीवाना कहता है, कोई पागल समझता है

फिर मेरी याद आ रही होगी

मैं तो झोंका हूँ हवाओं का उड़ा ले जाऊँगा

रंग दुनिया ने दिखाया है निराला देखूँ

रात और दिन का फ़ासला हूँ मैं

सब तमन्नाएँ हों पूरी कोई ख्वाहिश भी रहे

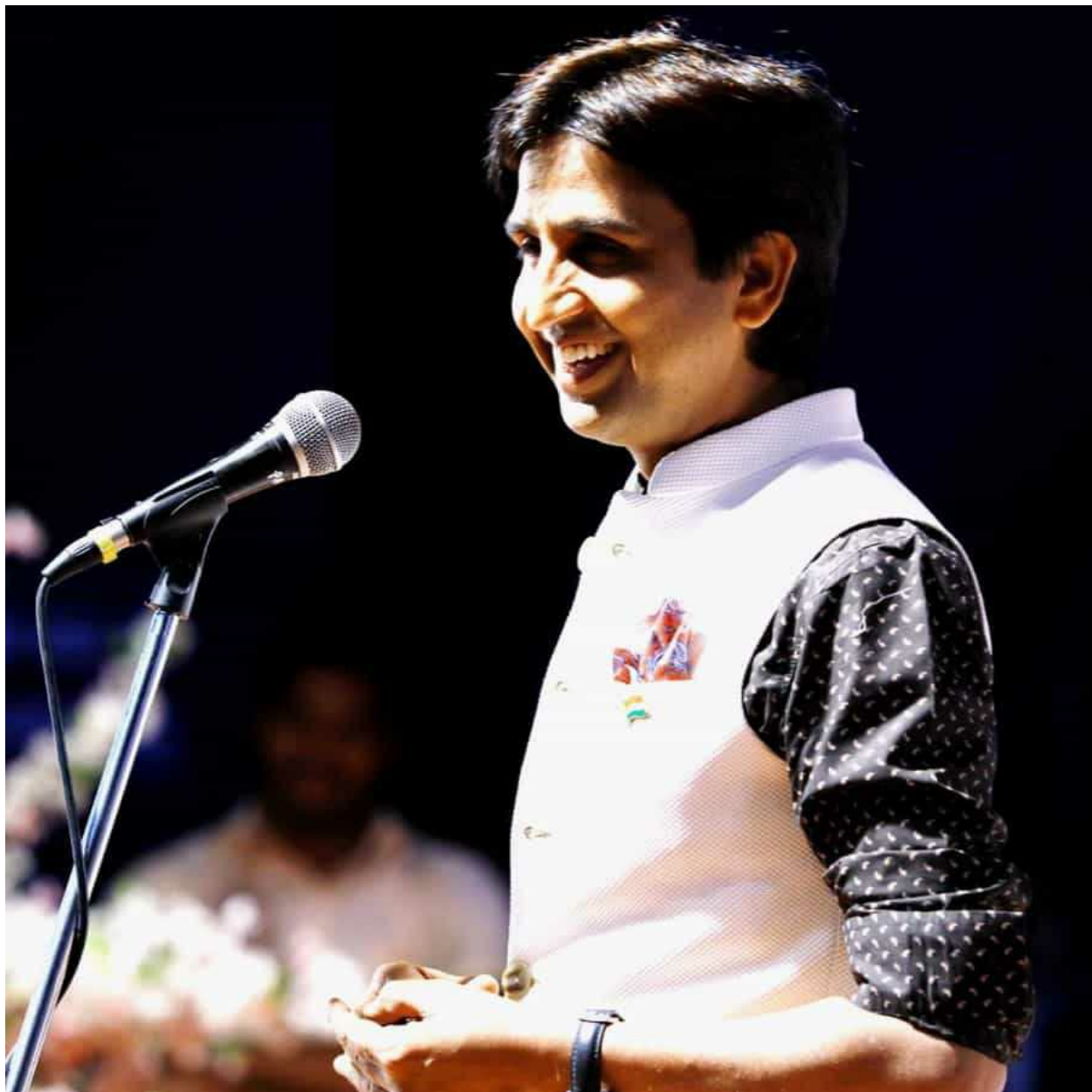
उनकी खैर-ओ-ख़बर नहीं मिलती

तुम्हें जीने में आसानी बहुत है

उसी की तरह मुझे सारा ज़माना चाहे

ये ख़यालों की बद-हवासी है

परिचय



इतिहास रचने वाले कुछ ऐसे लोग होते हैं जो अपने करियर को ही अपना जीवन बना लेते हैं और जब करियर एक कवि का होता है, तो हर कदम जोखिम भरा होता है। डा. कुमार विश्वास एक ऐसे कवि हैं, जिन्होंने काव्य के क्षेत्र में बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त किया है इसके साथ ही साहित्य को भी गौरान्वित किया है। उनके काव्य कैरियर की शुरुआत अच्छी नहीं थी। इंजीनियरिंग क्षेत्र को छोड़ना और अपने परिवार की इच्छा के विरुद्ध साहित्य के क्षेत्र में आगे बढ़ना, यह बहुत बड़ी बात है। उन्होंने ये सब अपने आप को पूरी तरह से साहित्य को समर्पित करने के लिए किया और उसका फल आपके सामने है। एक कवि के रूप में उनके जीवन को एक दशक से अधिक समय हो गया है और उनकी लोकप्रियता प्रत्येक सेकंड के साथ बढ़ रही है।

उनकी सबसे चर्चित पंक्तियों “कोई दीवाना कहता है” से उन्होंने लाखों युवाओं के दिलों में जगह बना दी और उन्हें सबसे प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित भारतीय कवि के रूप में स्थापित किया। रूमनियत पर उनकी पकड़ और अपनी

एक अलग अदा का कोई सानी नहीं है, लेकिन वे केवल यहाँ तक सीमित नहीं हैं। उनके कलम ने अन्य कई चीजों पर भी व्यापक रूप से लिखा है जैसे सामाजिक मुद्दे, महिलाओं के खिलाफ अत्याचार और महिला सशक्तीकरण, जीवन दर्शन और देशभक्ति इत्यादि। सामूहिक रूप से कहें तो उनकी कविताएँ समाज के लिए एक आईना हैं। वे अपनी कविताओं को मंच पर जुनून के साथ कहते हैं और गाते हैं। उनकी कविताओं में से कुछ को रिकॉर्ड गीतों के रूप में भी बनाया गया है।

वे बॉलीवुड में गीतकार के रूप में भी काम कर रहे हैं। एक बॉलीवुड प्रोजेक्ट के लिए, उनकी कविता को खुद आषा भोसले जी ने आवाज़ दी है। उन्होंने खुद को केवल कविताओं लिखने और स्टेज शो करने तक ही सीमित नहीं रखा है। वे सोशल मीडिया में भी काफी सक्रिय हैं, समाज में होने वाली घटनाओं पर लगातार लिखकर, प्रतिक्रिया और टिप्पणी कर रहे हैं। नेटिज़न्स के बीच भी उनकी बुद्धि के लाखों प्रशंसक हैं। उन्हें कई काव्य-विधाओं से विभूषित किया गया है और वे आज हिंदी साहित्य के क्षेत्र में एक विशिष्ट नाम हैं। उनकी उपलब्धियां उन्हें अविश्वसनीय बनाती हैं और वे वर्षों से अनुपम हैं। हिंदी साहित्य के क्षेत्र में एक नई गाथा लिखने के लिए साहित्य को उन पर गर्व है। कुमार विश्वास एक ऐसे कवि हैं, जो 'कवि सम्मेलन' या काव्य-कृतियों को रूढ़िबद्ध मानदंडों से हटाकर इसे एक कलाकार का मंच बना दिया।

उन्होंने जो कुछ भी किया है उसमें महारत हासिल की है और उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। वे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों के लिए लगातार पहली पसंद रहे हैं। उन्होंने वही किया जो उन्होंने कहा और आज वे बहुत लोकप्रिय हैं। यह बड़ी हस्तियों के लिए भी मुश्किल है कि वे रात भर भीड़ को समा बाँधकर रख सके। कुमार विश्वास बर्षों से सिर्फ एक माइक और अपनी आत्मीय आवाज़ उनकी कविता से ऐसा करते आ रहे हैं। सांस्कृतिक संगठनों के साथ, उन्होंने कई अग्रणी जैसे आई आई टी, आई आई एम और भारत के अन्य प्रमुख संस्थानों में भी प्रदर्शन किया है। असंख्य भीड़ जो उनके संगीत समारोहों में जाती है, यह युवाओं के बीच उनकी भारी लोकप्रियता को दिखाती है। उनके प्रशंसकों में दुनिया भर के सभी उम्र के लोग शामिल हैं। बहुत से लोग उनके दोहे और उनकी कविताओं को अपनी संगीत पुस्तकालय में संग्रह के लिए संजोते हैं। उन्होंने कई छंदों को लिखा और गाया है, लेकिन फिर भी 'कोई दीवाना कहता है' कई सालों से आज भी जनता की पहली मांग बनी हुई है।

उनकी लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि दर्शक उनकी कविता उनके साथ-साथ गाते हैं। उनके वीडियो यू-ट्यूब पर सुपरहिट हैं और वे नेटिज़ंस द्वारा व्यापक रूप से एक प्रसिद्ध सेलिब्रिटी हैं। उनके एकल संगीत कार्यक्रम जनता के बीच उनके अन्य उपक्रमों की तरह लोकप्रिय हैं। वे वर्षों से देश के सबसे अधिक वेतन पाने वाले और सबसे व्यस्त कवि हैं। उनकी लोकप्रियता लगातार बढ़ती जा रही है और यह उनके जुनून के प्रति समर्पण का ही परिणाम है। उन्होंने सभी बाधाओं को पार किया और एक विशाल प्रशंसक वर्ग बनाया और जैसे जैसे उनकी कविता का जादू चलता जा रहा है बस संख्या बढ़ती ही जा रही है। एक अद्भुत कवि और उत्कृष्ट कलाकार होने के अलावा, कुमार विश्वास एक महान संचारक भी हैं। उनके प्रेरक कौशल असाधारण रूप से शानदार हैं और भीड़ को इकट्ठा करने में सफल होते हैं। वे अच्छी तरह से समझते हैं कि जो विशाल युवा ऊर्जा उनके संगीत समारोहों में इकट्ठी होती है उनको सकारात्मक रूप से प्रसारित करने की आवश्यकता है। छंदों से मंत्रमुग्ध करने के साथ, वह जीवन के दर्शन को भी अपनी कविताओं के माध्यम से अच्छी तरह से समझाते हैं। सभी आयु वर्ग के लोग उन्हें पहचानते हैं। उन्होंने कईयों के जीवन पर प्रभाव डाला है। उन्हें प्रमुख संस्थानों, सामाजिक कल्याण संगठनों के कार्यों आदि के लिए लगातार आमंत्रित किया गया है और उनके भाषणों को सभी के द्वारा मन से स्वीकार किया गया है।

उन्होंने सिलिकॉन वैली में गूगल मुख्यालय में निमंत्रण पर एक व्याख्यान भी दिया। वे सभी वैश्विक, राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों का अपनी शैली में विश्लेषण करते हैं। वे हमेशा समाज के कल्याण और राष्ट्र की प्रगति के प्रति अत्यधिक संवेदनशील रहे हैं। उन्होंने निडर होकर लोगों के हित में अपने विचारों का संचार किया है। वह सभी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्लेटफार्मों पर आम आदमी की आवाज़ रहे हैं। जब भी प्रगति के नैतिक पथ पर लोगों को प्रबुद्ध और प्रेरित करने की बात आती है, तो वह कोई कसर नहीं छोड़ते। यह मानवता के प्रति उनकी भावना है जो उन्हें अपने कैरियर के सभी पेशेवरों और विपक्षों के बीच ले जाती है। उनकी उपलब्धियां, भाषण और उनका पूरा जीवन प्रेरणा का है। कुमार विश्वास ने न केवल सम्मान, प्यार और प्रशंसा अर्जित की है, उन्होंने लाखों लोगों को रास्ता भी दिखाया है। उन्होंने हिंदी कविता और कवि सम्मेलन की संरचना और यांत्रिकी का कायाकल्प किया और एक नया आयाम गढ़ा। उन्होंने एक कवि, कलाकार और प्रेरक के रूप में रिकॉर्ड स्थापित किया है और गाथा

अभी भी जारी है क्योंकि वह विश्व स्तर पर जीवन को प्रभावित कर रहे हैं।

कवि के बारे में



डॉ. कुमार विश्वास हिन्दी के अग्रणी कवि तथा सामाजिक, राजनैतिक कार्यकर्ता हैं। उनका जन्म 10 फ़रवरी 1970 में पिलखुआ, गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ था। चार भाईयों और एक बहन में सबसे छोटे कुमार विश्वास ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा लाला गंगा सहाय स्कूल, पिलखुआ में प्राप्त की। उनकी माता श्रीमती रमा शर्मा गृहिणी हैं। उनके पिता डॉ॰ चन्द्रपाल शर्मा, आर एस एस डिग्री कॉलेज पिलखुआ में प्रवक्ता रहे। आगे उनके पिता उन्हें इंजीनियर बनाना चाहते थे। डॉ. कुमार विश्वास का मन मशीनों की पढाई में नहीं रमा और उन्होंने बीच में ही वह पढाई छोड़ दी। उन्होंने स्नातक और फिर हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर किया, जिसमें उन्होंने स्वर्ण-पदक प्राप्त किया। उन्होंने "कौरवी लोकगीतों में लोकचेतना" विषय पर पी.एच.डी. प्राप्त किया। उनके इस शोध-कार्य को 2001 में पुरस्कृत भी किया गया। अब महाविद्यालयों में अध्यापन कार्य कर रहे हैं।

इसके साथ ही डॉ. विश्वास हिन्दी कविता मंच के सबसे व्यस्ततम कवियों में से हैं। उनके मुख्य काव्य संग्रह हैं: कोई दीवाना कहता है और एक पगली लडकी के बिन। डॉ. कुमार विश्वास हिन्दी भाषा के एक अग्रणी कवि हैं। श्रंगार रस के गीत इनकी विशेषता है। डॉ. कुमार विश्वास ने अपना कैरियर राजस्थान में प्रवक्ता के रूप में 1994 में शुरू किया। उन्होंने अब तक हज़ारों कवि-सम्मेलनों में कविता पाठ किया है। साथ ही वह कई पत्रिकाओं में नियमित रूप से लिखते हैं। उन्होंने आदित्य दत्त की फ़िल्म 'चाय-गरम' में अभिनय भी किया है। विख्यात लेखक स्वर्गीय धर्मवीर भारती ने डॉ. विश्वास को इस पीढ़ी का सबसे ज़्यादा सम्भावनाओं वाला कवि कहा है। प्रथम श्रेणी के हिन्दी गीतकार 'नीरज' जी ने उन्हें 'निशा-नियामक' की संज्ञा दी है। मशहूर हास्य कवि डॉ. सुरेन्द्र शर्मा ने उन्हें इस पीढ़ी का एकमात्र आई एस ओ:2006 कवि कहा है। कवि-सम्मेलनों और मुशायरों के क्षेत्र में भी डॉ. विश्वास एक बड़ा नाम हैं। वो अब तक हज़ारों कवि सम्मेलनों और मुशायरों में कविता-पाठ और संचालन कर चुके हैं।

भारत के सैकड़ों छोटे-बड़े शहरों में कविता पाठ करने के अलावा उन्होंने कई अन्य देशों में भी अपनी काव्य-प्रतिभा का प्रदर्शन किया है। इनमें अमेरिका, दुबई, मस्कट, अबू धाबी और नेपाल जैसे देश शामिल हैं। उन्हें अब तक कई पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका है। जैसे डॉ. कुंवर बेचैन काव्य-सम्मान एवम पुरस्कार समिति द्वारा 1994 में 'काव्य-कुमार पुरस्कार', साहित्य भारती, उन्नाव द्वारा 2004 में डॉ. सुमन अलंकरण, हिन्दी-उर्दू अवार्ड अकादमी द्वारा 2006 में साहित्य-श्री। उनके बारे में अधिक जानकारी आप उनकी ऑफिसियल वेबसाइट पर देख सकते हैं - <http://kumarvishwas.com>

उनकी मुख्य कवितायें

कोई दीवाना कहता है, कोई पागल समझता है



कोई दीवाना कहता है, कोई पागल समझता है
मगर धरती की बेचैनी को बस बादल समझता है
मैं तुझसे दूर कैसा हूँ, तू मुझसे दूर कैसी है
ये तेरा दिल समझता है या मेरा दिल समझता है
मोहब्बत एक अहसासों की पावन सी कहानी है
कभी कबिरा दीवाना था कभी मीरा दीवानी है
यहाँ सब लोग कहते हैं, मेरी आँखों में आँसू हैं
जो तू समझे तो मोती है, जो ना समझे तो पानी है
समंदर पीर का अन्दर है, लेकिन रो नहीं सकता
यह आँसू प्यार का मोती है, इसको खो नहीं सकता
मेरी चाहत को दुल्हन तू बना लेना, मगर सुन ले
जो मेरा हो नहीं पाया, वो तेरा हो नहीं सकता
भ्रमर कोई कुमुदुनी पर मचल बैठा तो हंगामा
हमारे दिल में कोई ख्वाब पल बैठा तो हंगामा
अभी तक डूब कर सुनते थे सब किस्सा मोहब्बत का
मैं किस्से को हकीकत में बदल बैठा तो हंगामा

फिर मेरी याद आ रही होगी



फिर मेरी याद आ रही होगी
फिर वो दीपक बुझा रही होगी
फिर मिरे फेसबुक पे आ कर वो
खुद को बैनर बना रही होगी
अपने बेटे का चूम कर माथा
मुझ को टीका लगा रही होगी
फिर उसी ने उसे छुआ होगा
फिर उसी से निभा रही होगी
जिस्म चादर सा बिछ गया होगा
रूह सिलवट हटा रही होगी
फिर से इक रात कट गई होगी
फिर से इक रात आ रही होगी

मैं तो झोंका हूँ हवाओं का उड़ा ले जाऊँगा

मैं तो झोंका हूँ हवाओं का उड़ा ले जाऊँगा
जागती रहना तुझे तुझ से चुरा ले जाऊँगा
हो के कदमों पे निछावर फूल ने बुत से कहा
ख़ाक में मिल कर भी मैं खुशबू बचा ले जाऊँगा
कौन सी शय मुझ को पहुँचाएगी तेरे शहर तक
ये पता तो तब चलेगा जब पता ले जाऊँगा
कोशिशें मुझ को मिटाने की भले हों कामयाब
मिटते मिटते भी मैं मिटने का मज़ा ले जाऊँगा
शोहरतें, जिन की वजह से दोस्त दुश्मन हो गए
सब यहीं रह जाएँगी मैं साथ क्या ले जाऊँगा

रंग दुनिया ने दिखाया है निराला देखूँ

रंग दुनिया ने दिखाया है निराला देखूँ
है अँधेरे में उजाला तो उजाला देखूँ
आइना रख दे मिरे सामने आखिर मैं भी
कैसा लगता है तिरा चाहने वाला देखूँ
कल तलक वो जो मिरे सर की कसम खाता था
आज सर उस ने मिरा कैसे उछाला देखूँ
मुझ से माज़ी मिरा कल रात सिमट कर बोला
किस तरह मैं ने यहाँ खुद को सँभाला देखूँ
जिस के आँगन से खुले थे मिरे सारे रस्ते
उस हवेली पे भला कैसे मैं ताला देखूँ

रात और दिन का फ़ासला हूँ मैं

रात और दिन का फ़ासला हूँ मैं
खुद से कब से नहीं मिला हूँ मैं
खुद भी शामिल नहीं सफ़र में पर
लोग कहते हैं क़ाफ़िला हूँ मैं
ऐ मोहब्बत तिरी अदालत में
एक शिकवा हूँ इक ग़िला हूँ मैं
मिलते रहिए कि मिलते रहने से
मिलते रहने का सिलसिला हूँ मैं
फूल हूँ ज़िंदगी के गुलशन का
मौत की डाल पर ख़िला हूँ मैं

सब तमन्नाएँ हों पूरी कोई ख्वाहिश भी रहे

सब तमन्नाएँ हों पूरी कोई ख्वाहिश भी रहे
चाहता वो है मोहब्बत में नुमाइश भी रहे
आसमाँ चूमे मिरे पँख तिरी रहमत से
और किसी पेड़ की डाली पे रिहाइश भी रहे
उस ने सौंपा नहीं मुझ को मिरे हिस्से का वजूद
उस की कोशिश है कि मुझ से मिरी रंजिश भी रहे
मुझ को मालूम है मेरा है वो मैं उस का हूँ
उस की चाहत है कि रस्मों की ये बंदिश भी रहे
मौसमों से रहें 'विश्वास' के ऐसे रिश्ते
कुछ अदावत भी रहे थोड़ी नवाज़िश भी रहे

उनकी ख़ैर-ओ-ख़बर नहीं मिलती

उन की ख़ैर-ओ-ख़बर नहीं मिलती
हम को ही ख़ास कर नहीं मिलती
शाएरी को नज़र नहीं मिलती
मुझ को तू ही अगर नहीं मिलती
रूह में दिल में जिस्म में दुनिया
डूँढता हूँ मगर नहीं मिलती
लोग कहते हैं रूह बिकती है
मैं जिधर हूँ उधर नहीं मिलती

तुम्हें जीने में आसानी बहुत है

तुम्हें जीने में आसानी बहुत है
तुम्हारे खून में पानी बहुत है
कबूतर इश्क़ का उतरे तो कैसे
तुम्हारी छत पे निगरानी बहुत है
इरादा कर लिया गर खुद-कुशी का
तो खुद की आँख का पानी बहुत है
ज़हर सूली ने गाली गोलियों ने
हमारी ज़ात पहचानी बहुत है
तुम्हारे दिल की मन-मानी मिरी जाँ
हमारे दिल ने भी मानी बहुत है

उसी की तरह मुझे सारा ज़माना चाहे

उसी की तरह मुझे सारा ज़माना चाहे
वो मिरा होने से ज़्यादा मुझे पाना चाहे
मेरी पलकों से फिसल जाता है चेहरा तेरा
ये मुसाफ़िर तो कोई और ठिकाना चाहे
एक बनफूल था इस शहर में वो भी न रहा
कोई अब किस के लिए लौट के आना चाहे
ज़िंदगी हसरतों के साज़ पे सहमा-सहमा
वो तराना है जिसे दिल नहीं गाना चाहे

ये ख़यालों की बद-हवासी है

ये ख़यालों की बद-हवासी है
या तिरें नाम की उदासी है
आइने के लिए तो पतली हैं
एक का'बा है एक काशी है
तुम ने हम को तबाह कर डाला
बात होने को ये ज़रा सी है